वार्तालाप-1236, नीलंगा, ता.17.10.11
Discussion-1236, Nilanga, Dt.17.10.11

जिज्ञासु:- बाबा, भक्तिमार्ग में कहा जाता है राम चरण सुखदाई। ऐसा क्यों बोला?
बाबा:- राम चरण सुखदाई। चरण कहते हैं पाँव को। पाँव कौन से हैं, वो नहीं जानते क्या? जैसे पाँव से कहीं चलकर जाया जाता है, पाँव से पहूँचते हैं। ऐसे कहा जाता है, तुम्हारी बुद्धि हमारे गुरुजी तक नही पहुँचेगी अर्थात तुम्हारे बुद्धि के पाँव हमारे गुरुजी तक नहीं पहुँचेंगे। तो ये पहूँचने का काम बुद्धि भी करती है। बुद्धि दौड़ती भी है, बुद्धि हाई जम्प भी लगाती है और बुद्धि चलती भी है और कोई-कोई की बुद्धि रुक भी जाती है। तो बुद्धि से मिसाल दिया जाता है चरण का, पाँव का। तो मनुष्यों कि बुद्धि सुखदाई है या भगवान के बुद्धि रुपी चरण सुखदायी है? उन्होंने राम को भगवान समझ लिया है। अब राम तो भगवान है नहीं। वो तो त्रेता के राम को भगवान समझ लेते हैं। लेकिन वास्तव में है तो कौन से राम की बात? वो ही राम वाली आत्मा 84 के चक्र में आते-आते अन्तिम जन्म में शिवबाप का रथ बनती है, मुकर्रर रथ। तब कहा जाता है राम चरण सुखदाई। और सभी जन्मों में सुखदाई नहीं कहेंगे क्योंकि और जन्म के लिये तो मुरली में बोला है, राम सीता को खादी का राजा रानी कहेंगे। क्या मतलब? खादी ठण्डी में गर्म रहती है और गर्मियों में ठण्डी रहती है; लेकिन बरसात में भारी हो जाती है, चिपकती है, धूल-मिट्टी में बहुत गन्दी हो जाती है, इसलिये दुखदाई हो जाती है। तो राम की बात नहीं है। जो देहअभिमानी होते हैं वो देहधारी को ही भगवान समझ बैठते हैं। तो देहधारी भगवान है, राम, कृष्ण भगवान है या शिवबाबा भगवान है? शिवबाबा भगवान है। शिव की आत्मा अलग और राम की आत्मा अलग। राम, कृष्ण कहे तो जाते हैं, ये दो बैलों कि जोड़ी तो हैं, परन्तु ये तो बैल है, ये कोई शिवबाबा नहीं है। तो इनके पाँव, राम, कृष्ण के पाँव सुखदाई नहीं हैं। किसके पाँव सुखदाई हैं? शिवबाबा के पाँव सुखदाई हैं।

Student: Baba, it is said in the path of *bhakti* (*bhaktimarg*): The feet of Ram are givers of happiness, why it is said so?
Baba: Ram's feet (*caran*) are givers of happiness. Feet are called *caran*. Don't you know which feet they are? Like, we go somewhere walking with our feet, we reach [somewhere] with our feet. It is said, your intellect will not reach our *guruji* means your feet like intellect will not reach our guru. So this work of reaching [somewhere] is done by the intellect as well. The intellect runs, it takes a high jump, it walks and some people's intellect even stops. So the feet are compared with the intellect. So is the intellect of human beings giver of happiness or are the feet like intellect of God is givers of happiness? They have considered that Ram is God. Now, Ram is not God. They consider that Ram of the Silver Age is God. But actually, which Ram is it about? That very soul of Ram passing through the cycle of 84 [births] becomes the chariot, the permanent chariot of the Father Shiva in the last birth. Then it is said 'Ram's feet are givers of happiness'. They cannot be called givers of happiness in all the other births because it has been said for the other births in the murli that Ram and Sita will be called the king and queen of *Khaadi* (coarse type of cotton cloth). What does it mean? *Khaadi* remains warm in winter and cool in summer, but in rainy season, it becomes heavy, it

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

sticks [to the body], it becomes very dirty in dust and mud this is why it becomes sorrow giving (*dukhdaayi*). So it is not about Ram, those who are body conscious believe the bodily being himself to be God. So is a bodily being God, are Ram and Krishna God or is Shivbaba God? Shivbaba is God. Shiva's soul is different and Ram's soul is different. It is certainly said Ram and Krishna, it is certainly a pair of bulls but they are bulls not Shivbaba. So their feet, Ram and Krishna's feet are not givers of happiness. Whose feet are givers of happiness? Shivbaba's feet are givers of happiness.

प्रश्न:- कोई ने पूछा है - न चाहते हुये भी बुरे संकल्प क्यों आते हैं?

बाबा:- पहली बात, न चाहते हूये भी बूरे संकल्प इसलिये आते हैं, कि अभी 84 जन्मों के ड्रामा की रील घूम रही है। 84 जन्मों में हमने 63 जन्म में बुरे कर्म भी बहुत किये हैं, अभी हम उल्टी सीढ़ी चढ़ रहे हैं या ऊपर से नीचे उतर रहे हैं? नीचे से ऊपर चढ़ रहे हैं। तो चढ़ते-चढ़ते द्वापर की सीढ़ी चढ़ गए होंगे, चढ़ गए या नहीं चढ़ गए? चढ़ गए? अगर चढ़ गए तो सतयुग, त्रेता में अच्छा ही अच्छा होता है कि वहाँ बुरा भी होता है? अगर कलियुग और द्वापर की सीढ़ी चढ़ गए तो त्रेता युग के संकल्पों में रमण करेंगे, सुखदाई संकल्पों की रील घूमेगी या दुखदाई संकल्पों की रील घूमेगी? सुखदाई संकल्पों की ही रील घूमेगी। इससे साबित होता है कि अभी हम कलियुग और द्वापर में ही चक्कर काट रहे हैं। 63 जन्मों की रील घूम् रही है। कभी अच्छे कर्म किये हैं तो अच्छी रील घूमती है। अच्छे से याद भी आती है, अच्छे से पुरुषार्थ भी होता है। जब खराब कर्म किये हैं, दुष्ट संग मिला है तो वो रील ऐसी ही घूमती है। हम कितना भी पुरुषार्थ करना चाहे, कितना भी याद करना चाहे लेकिन याद नहीं आती है। बोलते हैं - बाबा को याद करने बैठने से बाबा का चेहरा भी याद नहीं आता है, इसका कारण क्या है? अरे, रील घूमेगी उस रील घूमने में अगर बाबा से जुदा हो गए होंगे, कोई और से बुद्धि योग चिपकता रहा होगा, कोई और के चक्कर में फँस गए, सारा जिन्दगी उसके साथ बिताया जो कुसंग में ले जाने वाला है, तो वो अपने चेहरे की याद दिलायेगा या बाबा का चेहरा याद आयेगा? अपने चेहरे की याद दिलायेगा। बाबा का चेहरा भूल जायेगा।

Question: Someone has asked, why do bad thoughts come [to our mind] even if we don't wish?

Baba: First thing, bad thoughts come [to your mind] even if you don't wish because the drama's *reel* of 84 births is rotating now. In the 84 births, we have also performed many bad actions for 63 births, now are we climbing up the ladder or are we coming down the ladder? We are climbing up from down. So, while climbing up you must have climbed up the ladder of the Copper Age. Have you climbed up [the ladder] or not? Have you climbed up? If you have climbed up [the ladder], then is everything good in the Golden and Silver Ages or is there anything bad as well? If you have climbed the ladder of the Iron and Copper Ages, then you will be engaged in the thoughts of the Silver Age. Will the *reel* of joy giving thoughts rotate or will the *reel* of sorrow giving thoughts rotate? The *reel* of only joy giving thoughts will rotate. It proves that now we are wandering only in the Copper and Iron Ages. The *reel* of 63 births is rotating, sometime if we have done good actions, the good *reel* rotates. We are able to remember [Shivbaba] well and we are also able to make good *purushaarth* (spiritual effort). When we have done wrong actions, we have got wicked company, then a similar kind

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

of *reel* rotates. No matter how much we try to make *purushaarth* and try to remember [Shivbaba] we are not able to remember Him. They say, when we sit in remembrance of Baba we don't even remember his face, what is the reason of this? *Arey*! When the *reel* rotates… in that *reel* if someone was separated from Baba, if the intellect was engaged with someone else, if he was trapped in someone else's trap, if he spent the entire life with the one who gives bad company, then will he make you remember his face or will you remember Baba's face? He will make you remember his face. You will forget Baba's face.

जिज्ञासु:- बाबा, सूर्य तो अग्नि का गोला है ।

बाबा:- हाँ, जी।

जिज्ञासु:- तो शनि उसका पुत्र कैसे कहा जाता है?

बाबा:- क्यों? याद को अग्नि कहा जाता है या नहीं? कहा जाता है न। 500-700 करोड़ आत्मायें हैं पुरुषार्थ करने वाली, उन पुरुषार्थ करने वालों में कोई निरन्तर याद करने वाला भी होगा या नहीं होगा? निरन्तर याद कि अग्नि में ठहरने वाला होगा या नहीं बनेगा? बनता है। तो वो हो गया आग का गोला। और सब एक जैसे पुरुषार्थी होंगे क्या? नहीं। और सब जो होते हैं, सारी दुनिया तो एक के ही बच्चे हैं न, सारी दुनिया किसका बच्चा है? अरे, एक ही बीज का बच्चा है ना। एक ही बीज बाप से पैदा हुए न। सारी दुनिया प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद है न। सारी दुनिया तो प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद है लेकिन एक ही अम्मा के बच्चे हैं क्या? धरणी - 2 का फर्क पड़ेगा या नहीं पड़ेगा? तो धरणी का फर्क पड़ जाता है। तो बहुत अन्तर हो जाता है।

Student: Baba, the Sun is a ball of fire, then how is Saturn his son?
Baba: Why? Is remembrance called fire or not? It is called so, isn't it? There are 500-700 crore (five-seven billion) souls who make *purushaarth*, among those *purushaarthis* will there be someone who remembers constantly or not? Will there be someone who constantly remains in the fire of remembrance or not? There will be. So he is the ball of fire. And will everyone be equal *purushaarthi*? No. And all those who exist… the entire world is the child of only the One, isn't it? The whole world is the child of whom? *Arey*! It is the child of only One seed, isn't it? [Everyone] is born only from the One seed Father, isn't it? The entire world is the progeny of Prajapita Brahma, isn't it? The whole world is the progeny of Prajapita Brahma but are they children of only one mother? Will different soils make a difference or not? So the soil makes a difference. It makes a big difference.

प्रश्न:- प्रकृति के पाँच तत्वों से विनाश होगा, तो यहां बेहद में पाँच तत्व हैं- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश। तो ये जो पाँच तत्व है, जो अष्ट देवों के रुप में दिखाये जाते हैं तो क्या ये विनाश के टाईम में, महाविनाश में प्रकृति का साथ देंगे?

बाबा:- अरे! ये प्रकृति के ही पाँच रुप है, कौन? पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश। जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार ये किसके रुप है? रावण के रुप हैं। ऐसे ही ये पाँच तत्व भी प्रकृति के ही रुप हैं। प्र माने प्रकष्ट, कृति माने किया हुआ कार्य, प्रकष्ट रुप से तैयार होते हैं। ये भी रिजूविनेट होते हैं। इनका आदि नहीं होता है। ये प्रकृति के पाँच तत्व भी अनादि है। इनको भी

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

देवता का रुप दिया गया है। दुनिया की हर चीज सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमो होती है या नहीं होती है? तो अष्ट देव भी तमोप्रधान बनेंगे या नहीं बनेंगे? बनेंगे। जो जितने बड़े आदमी का बच्चा होता है वो उतना ज्यादा पावरफुल भी होता है या नहीं होता है? पावरफुल भी होता है। तो ये पाँच तत्व जो देवता के रुप में दिखाये गये हैं, अष्ट देवों में दिखाये गए हैं, ये भी जब पतित होते हैं पूरे आखिरी जन्म में, तो अत्यन्त विनाशकारी बन जाते हैं और सबसे ज्यादा विनाश करती है प्रकृति। रावण के पाँच रुप विनाश नहीं इतना कर पाते हैं, माया इतनी विनाशकारी नहीं है, जितनी प्रकृति विनाशकारी है। ऐसी तमोप्रधान प्रकृति बन जाती है। तो ये पाँच तत्व, प्रकृति का जो प्रधान रूप है पृथ्वी, धरणी माता कहा जाता है, वसुन्धरा कहा जाता है, जगत की अम्बा कहा जाता है, उसके सहयोगी बन जाते हैं और महाविनाश में पूरा साथ देते हैं।

Question: Destruction will take place through the five elements of nature, so there are the five elements in the unlimited here: earth, water, air, fire and sky. So these five elements that are shown in the form of the eight deities, will they support the nature at the time of the great destruction?
Baba: *Arey*! These are the five forms of nature itself, who? Earth, water, air, fire and sky. Like, whose forms are lust, anger, greed, attachment and ego? These are forms of Ravan. Similarly, these five elements are the forms of nature itself. '*Pra*' means *prakrishth*, '*kriti'* means the work done, they are made in an excellent manner. They too are rejuvenated. They have no beginning. These five elements of nature are also eternal. They too have been given the form of deity. Does every thing of the world become *satopradhaan*, *satosaamaanya*, *rajo* and *tamo* or not? So will the eight deities also become *tamopradhaan* or not? They will become. Is the child of a rich man more *powerful* or not? He is *powerful* too. So these five elements who have been shown in the form of deities, the eight deities, when they become totally impure in the last birth, they become very destructive and nature does destruction the most. Ravan's five forms are not able to do so much destruction; Maya is not as destructive as nature. Nature becomes so *tamopradhaan*! So these five elements become the helpers of the main form of nature [i.e.] earth, who is called Mother Earth, *Vasundharaa*, the World Mother and give [her] full support in the great destruction.

प्रश्न:- सारे कल्प में ब्राह्मणों के हर आत्मा के सम्बन्ध और सम्पर्क किस आधार पर होते हैं?
बाबा:- अभी संगमयुग में सम्बन्धों और सम्पर्कों कि शूटिंग हो रही है या नहीं? (किसीने कहा - हो रही है।) कैसे? किस आधार पर होती है? (कोई ने कहा - संकल्पों के आधार पर) संकल्पों के आधार पर। संकल्पों से ब्रह्मा ने सृष्टि रची। तो ब्राह्मणों ने अपनी-2 सृष्टि नहीं रची है क्या? हर ब्राह्मण आत्मा एक सितारा है। लोग समझते हैं हर सितारे में एक दुनिया बसी हुई है। लेकिन उन सितारों में दुनिया नहीं बसी हुई है, वहाँ कोई चैतन्य प्राणी नहीं रहते हैं। ये तो ये धरती के चैतन्य सितारे हैं, जिनकी 84 जन्मों की सम्बन्धों, सम्पर्कों, संसर्गियों की अपनी-2 ही अलग-2 दुनिया है। ये संकल्पों के आधार पर हम अपनी दुनिया अभी तैयार कर रहे हैं, शूटिंग हो रही है, रिहर्सल हो रही है, रिकार्डिंग हो रही है। जैसे-2 हम संकल्प करेंगे, वैसे-2 सम्बन्ध और सम्पर्क, संसर्ग बनाते जावेंगे। अब चाहे शिवबाबा के साथ बनाओ 84 जन्मों का हिसाब

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

किताब और चाहे अन्य आत्माओं के साथ बनाओ। अभी हर एक के मुट्ठी में अपना-2 भाग्य शिवबाबा ने दिया हुआ है।

Question: On what basis are the relationships and contacts of Brahmins, of every soul in the entire *kalpa* (cycle) formed?
Baba: Right now in Confluence Age, is the *shooting* of relationships and contacts taking place or not? How? On what basis does it takes place? (Someone said: On the basis of thoughts.) On the basis of thoughts. Brahma created the world through thoughts. So have the Brahmins not created their own world? Every Brahmin soul is a star. People believe that there is a world enclosed in every star. But there is not any world enclosed in those (physical) stars, no living creatures live there. It is about these living stars of the earth that have their own different world of relationships, contacts and connections of 84 births. We are preparing our world on the basis of thoughts now, the *shooting*, *rehearsal* and *recording* is going on. We will go on forming relationships contacts and connections according to our thoughts. Now whether you form accounts of 84 births with Shivbaba or with other souls, [it depends on you]. Now Shivbaba has given everyone his fortune in his fist.

जिज्ञासु:- बाबा, सच्ची गीता खंड-1 में लिखा है, जब सतयुग था तब चढ़ती कला थी और बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में थी। ये कैसा है? ये मिस प्रिंट है या कुछ राज़ है?
बाबा:- हाँ-2 जो सतयुग में थी आत्मायें, उनकी कलायें बहुत धीमी गति से कम होती हैं। इसलिये ज्यादा उतरती कला नहीं होती है। पूरे सतयुग में सिर्फ कितनी कलायें कम होती हैं? दो कलायें कम होती है। इसलिये बोला चढ़ती कला थी और युगों में उतरती कला होती जाती है। सतयुग में ये नहीं कहेंगे उतरती कला तीव्रता से होती है। बाकी जो आत्मायें हैं, जो उतरती कला वाली थी वो वो कहां थी? जो तीव्र गति से उतरती कला में जाती रहती हैं, वो कहाँ थी? परमधाम में थी। गलत नहीं है, सही है।

Student: Baba, it is written in Sacchi Geeta Volume-1, there was the ascending stage in the Golden Age and all the other souls were in the Abode of Liberation, what is this? Is it a misprint or does it have any secret?
Baba: Yes, the souls who were in the Golden Age, their celestial degrees decrease at a very slow pace. This is why there is not much degradation. Just how many celestial degrees decrease in the entire Golden Age? Two celestial degrees decrease. This is why it was said that there was the ascending stage, in other ages the celestial degrees keep decreasing. It will not be said that the celestial degrees decrease rapidly in the Golden Age. All the other souls that were degrading, where were they [at that time]? The [souls] who degrade rapidly, where were they? They were in the Soul World. [The point] is not wrong, it is correct.

जिज्ञासु:- ब्रह्मा के लिए 33 साल, विष्णु के लिए 33 साल, शंकर के लिए 33 साल ।
दूसरा जिज्ञासु:- 100 साल का इयुरेशन बताया न बाबा।
बाबा:-100 साल, हाँ।
जिज्ञासु:- ब्रह्मा के लिए 33 साल, विष्णु के लिए 33 साल और शंकर के लिए 33 साल।
बाबा:- 33 यर्स हरेक के , हाँ जी, हाँ जी।

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु:- तो ब्रह्मा का खत्म हुआ, शंकर का खत्म हुआ, अभी विष्णु का चल रहा है।
बाबा:- हाँ, ठीक है। अभी विष्णु का कार्यकाल चल रहा है। अभी प्रैक्टिकल कर्मों के हिसाब से पाप और पुण्य बन रहा है। पहले कहते थे अगर संकल्प में पाप होते हैं तो कोई पाप नहीं चढ़ेगा। अभी ऐसा नहीं कहते हैं, अभी संकल्प करते - करते ही प्रैक्टिकल होने लगते हैं। अभी विष्णु का प्रैक्टिकल शुरु हो चुका। प्रैक्टिकल शूटिंग का समय चल रहा है।

Student: Baba, there are 33 years for Brahma, 33 years for Vishnu and 33 years for Shankar.
Another student: Baba, it has been said about the duration of 100 years, hasn't it?
Baba: Yes, 100 years.
Student: 33 years for Brahma, 33 years for Vishnu and 33 years for Shankar.
Baba: Yes, there are 33 years for each one of them.
Student: So, [the time period] of Brahma and Shankar are over and Vishnu's [period] is going on now.
Baba: Yes, it is correct. Now Vishnu's *kaaryakaal*[1] is going on. Now, you are accumulating sins and merits according to your actions in practice. Earlier, He used to say that if sins are committed through the mind, no sins will be accumulated. Now, He does not say this. Now everything that you think starts happening in practice. Now, Vishnu's [part] has started in practice. The time of *practical shooting* is going on.

जिज्ञासु:- बाबा, एक मुरली में कहा है, ब्रह्मा के संकल्पों से सृष्टि रची , तो संकल्प सूक्ष्म हुए ना। (बाबा – हाँ।) तो पहले - 2 सूक्ष्मवतन प्रैक्टिकल में रचा है। (बाबा –हाँ।) सूक्ष्मवतन है जंक्षन, जहाँ देवताओं और ब्राह्मणों का जन्म होता है।
बाबा:- संगम होता है। (जिज्ञासु-संगम होता है।) हाँ, ब्राह्मण भी इकट्ठे होते हैं, ब्राह्मण आत्मायें भी और जो देव आत्मायें सतयुग में जन्म लेने वाली हैं, जो अभी शरीर छोड़ती जा रही है, बेसिक में उनका पक्का निश्चय बन जाता है। एडवांस ज्ञान कि गहराईयों को नहीं पकड़ पाती है। बुद्धू किस्म के देवतायें होते हैं या बुद्धिमान होते हैं? वो बुद्धु किस्म की आत्मायें हैं। तो ऐसी आत्मायें जो शरीर छोड़ करके सूक्ष्मवतन में सूक्ष्म शरीर धारण कर रही हैं, वो देवात्मायें हैं। वो, और हम ब्राह्मण जो एडवांस पार्टी के हैं, ज्ञान कि गहराइयों में जाने वाले हैं, बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चे हैं, बुद्धि चलाने वाले हैं, जब विनाश होगा तो सब अपना - 2 शरीर छोड़कर कहाँ इकट्ठे होंगे? परमधाम जाना शुरु कर देंगे इकट्ठे या कहीं इकट्ठे होते रहेंगे? सूक्ष्मवतन में इकट्ठे होंगे, मिलेंगे।
जिज्ञासु:- सूक्ष्मवतन प्रैक्टिकल में है ही नहीं, ऐसे कहा है?
बाबा:- मन के संकल्पों का ही एक सूक्ष्म स्टेज है, कोई ऊपर नीचे की बात नहीं है।

Student: Baba, it has been said in a murli: The world was created through Brahma's thoughts, so the thoughts are subtle, aren't they?
Baba: Yes.
Student: So, first of all the subtle world was created in practice.

[1] A period of time taken by each of the three personalities to do their work

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: Yes.
Student: The subtle world is a junction where the birth of the deities and Brahmins takes place.
Baba: The Confluence takes place. The Brahmins, the Brahmin souls gather, and the deity souls who will be born in the Golden Age, who are leaving their body now, they have a firm faith in the basic [knowledge]. They are unable to grasp the depth of the advance knowledge. Are they the ignorant type of deities or are they intelligent? They are ignorant type of souls. So such souls who are leaving their body and taking on subtle body in the subtle world, they are the deity souls. [It was said about] **them**. And we Brahmins who are of the Advance Party, who go into the depth of knowledge, we are the intelligent children of the Intelligent Father, we use our intellect. When the destruction takes place, where will everyone gather leaving their body? Will they start going to the Supreme Abode together or will they keep gathering somewhere? They will gather and meet in the subtle world.
Student: It has been said that there is nothing like the subtle world in practice.
Baba: It is a subtle stage of the thoughts of the mind itself, it is not about [the subtle world being] somewhere above or below.

जिज्ञासु:- बाबा, शंकर को काशी नगरी बहुत प्यारी है। इसका क्या मतलब है?
बाबा:- इसका मतलब ये है कि काश्य से बनता है काशी। काश्य कहते हैं तेज को और तेज आता है अव्यभिचारी याद से और अव्यभिचारी याद काशी के रुप में प्रसिद्ध होने वाली आत्मा जितना करती है उतना दूसरी आत्मायें अव्यभिचारी याद नहीं करती हैं, इसलिये बोला कि शंकर को काशी नगरी अती प्यारी है, जो अव्यभिचारी याद में रहते हैं। और आत्माओं कि कुछ न कुछ व्यभिचारी याद भी बन जाती है।

Student: Baba, *Kashi nagri* (the city of Kashi) is very dear to Shankar. What does this mean?
Baba: It means *Kashi* is made from *kaashya* (ardour). Ardour is called *kaashya* and ardour comes from unadulterated remembrance. And other souls don't have unadulterated remembrance to the extent the soul who becomes famous as Kashi has. This is why it was said that *Kashi nagri*, who stays in the unadulterated remembrance is very dear to Shankar, the remembrance of other souls also becomes adulterous to some extent.

जिज्ञासु:- बाबा, चन्द्रमा के ऊपर कुछ घर-बार है क्या?
बाबा:- घर बनाना है? वो ब्रह्मकुमार अपना घर कहाँ बना रहे हैं? किसके पास बना रहे हैं? ज्ञान चन्द्रमाँ ब्रह्मा के नजदीक पहूँच रहे हैं, तो ज्ञान चन्द्रमाँ ब्रह्मा के पास उन्हे कोंई प्लाट-व्लाट मिलेगा क्या? वहाँ तो पानी भी नहीं है। वहाँ ज्ञान जल है? ज्ञान जल ही नहीं है। जल तो जीवन है। वहाँ जीवन ही नहीं है, तो वहाँ रह के क्या करेंगे?

Student: Baba, are there any houses on the Moon?
Baba: Do you want to make a house there? Where and near whom are those Brahmakumars making their houses? They are reaching near the Moon of knowledge Brahma, so will they get any *plot* from Brahma, the Moon of knowledge? There is not even water there. Is there water of knowledge there? There isn't the water of knowledge [there] either. Water is life. When there is no life there, what will they do living there?

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

प्रश्न:- अन्धा कौन बनते हैं और कौन से संस्कारों से बनते हैं?

बाबा:- अरे! आँख कि गन्दगी ज्यादा फैलायेंगे, ज्यादा व्यभिचारी आँख से काम करेंगे, अती के व्यभिचार में जायेंगे, तो क्या बनेंगे? अन्धे बनेंगे। आँख से थोड़ा बहुत व्यभिचार करेंगे तो आँखें कमजोर हो जायेंगी, चश्मे-वश्मे लग जायेंगे। हिसाब-किताब तो बनेगा न, नहीं बनेगा? बनेगा।

Question: Who become blind and because of which *sanskaars* do they become this?
Baba: *Arey*! If someone spreads dirt through the eyes more, if he commits adulterous actions through the eyes more, if he reaches the extremity of adultery, then what will he become? He will become blind. If someone commits adulterous actions through the eyes to a lesser extent, then his eyes will become weak, he will have to wear glasses. Karmic accounts will be formed, won't they? Won't they be formed? They will be formed.

प्रश्न:- लूला कैसे बनते हैं?

बाबा:- बाँह टूट जाती है न, बाँह कहते हैं सहयोगियों को, जो अच्छे काम में कोई सहयोगी बनते हैं, कोई बुरे काम में सहयोगी बनते हैं, तो जो लगातार बुरे कामों में सहयोगी बनेंगे तो रिजल्ट क्या होगा? उनकी बाँह टूट जावेगी।

प्रश्न:- चोर कैसे बनते हैं?

बाबा:- अरे! चोरों का संग करेंगे तो चोर बन जाते हैं। चोरी के संस्कार पक्के हो जाते हैं।

Question: How do [people] become crippled?
Baba: The arm breaks, doesn't it? Helpers are called arms. Some become helpful in good works and some become helpful in bad works, so those who continuously become helpful in bad works, what will be their *result*? Their arm will break.
Question: How do people become thieves?
Baba: *Arey*! Someone becomes a thief by taking the company of thieves. The *sanskaars* of stealing become firm.

प्रश्न :- डकैत कैसे बनते हैं?

उत्तर:- डकैतों का संग करेंगे तो क्या बन जावेंगे ? डकैत बन जावेंगे।

प्रश्न:- मेहतर कैसे बनते हैं?

बाबा:- (कोई ने कहा - गन्द उठाते हैं।) हाँ, वो तो स्थूल गन्द है, लेकिन वो स्थूल गन्द जो है वो उठाने का निमित्त कैसे बने? दूसरों की बहुत ग्लानी करते हैं, तो क्या बनते हैं? मेहतर बनते हैं। जो ज्यादा दूसरों की व्यर्थ ग्लानी करता है... ग्लानी माने? जो उसने पाप नहीं किया है, वो पाप की बातें सुनाते हैं कि इसने ऐसा पाप किया, ये ऐसा पापी है, यह ऐसा गंदा है, व्यर्थ की बातें सुनाते हैं दूसरों को, तो क्या बनते हैं? मेहतर बनते हैं।

प्रश्न:- आतंकवादी?

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा:- अरे! स्थूल में जो आतंक फैलायेंगे तो उनके संस्कार क्या पड़ जावेंगे? कोई ऐसे होते हैं फालतू की अफवाहे फैलाते रहते हैं। तो फालतू की अफवाह फैलाने से क्या होगा? आदमी में आतंक बढ़ेगा या नहीं बढ़ेगा? तो अगले जन्म में फिर आतंकवादी बनेंगे।
प्रश्न:- वैश्या बनते हैं।
बाबा:- वैश्या बनाने वाले पुरुष होते हैं या स्त्रियाँ होती हैं? तो कोई पुरुष ऐसे होते हैं जो ज्यादा कन्याओं, माताओं को पोल्यूट करते हैं, तो उसका रिजल्ट उनको अगले जन्म में क्या मिलेगा? वैश्या बनेंगे।

Question: How do people become dacoits?
Baba: If someone takes the company of dacoits, what will he become? He will become a dacoit.
Question: How does someone become a sweeper?
Baba: (Someone said: They clean dirt.) Yes, that is the physical dirt, but how did they become instruments to clean that dirt? When someone defames others a lot, what does he become? He becomes a sweeper. The one who pointlessly defames others a lot… what does defamation mean? [It means,] someone has not committed a sin, but [a person] tells wrong things about him [to others]: 'He has committed this sin, he is such a sinful person, he is so dirty'; he narrates wasteful things to others, so what does he become? He becomes a sweeper.
Question: [What about] terrorist?
Baba: *Arey*, those who spread terrorism physically, what kind of *sanskaars* will they develop? There are some [people] who spread rumours pointlessly, so what will happen by spreading rumours pointlessly? Will terror increase in a person or not? So they will become terrorists in the next birth.
Question: [Some women] become prostitutes…
Baba: Is it men or women who make prostitutes? There are some men who pollute virgins and mothers a lot, so what result will they get in the next birth? They will become prostitutes.

प्रश्न:- बाबा ज्ञान में चलने वाली आत्मा अगर घर में अशांति का माहौल पैदा कर देती है और परिवार को बहुत दुःख देती है, तो उन आत्माओं का क्या हाल होगा?
बाबा:- अरे लौकिक दुनिया में कोई अगर उल्टा काम करते हैं, तो एक गुना पाप चढ़ता है और ज्ञान लेने के बाद, बाप का बच्चा बनने के बाद अगर कोई उल्टा काम करते हैं, पाप कर्म करते हैं, श्रीमत के बरखिलाफ चलते हैं तो कितना गुना पाप चढ़ता है? सौ गुना पाप चढ़ता है। कितना घाटा पड़ेगा? बहुत घाटा पड़ जाता है।

Question: Baba, if a knowledgeable soul creates a restless atmosphere at home and gives a lot of sorrow to the family, what will happen to such souls?
Baba: *Arey*! If someone does wrong actions in the *lokik* world, he accumulates one time sin and if someone does wrong actions, sinful actions, acts against shrimat after taking knowledge and becoming the child of the Father, then how many times sins does he accumulate? He accumulates hundred times sins. How much loss will he incur? He incurs a great loss.

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु:- अष्टदेव पाँच देवताओं के रुप में गाये जाते हैं?
बाबा:- पाँच देवता नहीं, देवतायें तो पूरे आठ हैं, लेकिन उनमें पाँच पाण्डव पक्के हैं। जैसे पाँच पाण्डव कहे जाते हैं, जो स्वदेशी हैं, तो पाँच पाण्डव कहे जाते हैं। ऐसे ही विधर्मी भी तो हैं, उन विधर्मियों में, विदेशियों में, कोई ऐसे हैं जो नास्तिक हो पड़े हैं। जैसे आर्य समाज और रशियन्स, तो वो अलग हो जाते हैं।

Student: Baba, the eight deities are shown in the form of five deities.
Baba: Not five deities, there are eight deities in total, but among them the five Pandavas (descendants of Pandu) are firm. Just like it is said the five Pandavas; they are *swadeshi* (those who belong to the country Bharat), so they are called the five Pandavas. Likewise there are the *vidharmis*[2] as well; among those *vidharmis* and *videshis* (foreigners) some have become Atheist. For example, the Arya Samaj and the Russians, so they are different.

जिज्ञासु:- बाबा, गीता में श्लोक आया है-कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्य: सर्वस्य धातारमचिंत्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात। इसका अर्थ क्या है ?
बाबा:- हम संस्कृत तो जानते नहीं, आप संस्कृत का पहले हिन्दी अर्थ बता दो फिर हम उसका बेहद में अर्थ बतायें। बताओ? हम संस्कृत नहीं पढ़े। कहाँ तक भाषायें पढ़ेंगे? बाबा कहते हैं भाषायें तुम बच्चे पढ़ो, क्योंकि दूसरों की सेवा करनी है। संस्कृत भी पढ़ो, अंग्रेजी भी पढ़ो, फारसी भी पढ़ो, उर्दु भी पढ़ो। सारी दुनिया की सेवा करनी है न, तो तुम सब भाषायें सीखों ताकि तुम्हारा भाग्य ज्यादा बने। तुमको विश्व कल्याणकारी बनना है। मैं थोड़े ही सारी भाषाये सीखुंगा। हाँ, तो बोलो।

Student: Baba, there is a shloka in the Gita: *Kavim puraanamanushaasitaaramanoraniiyaansamanusmaredyah sarvasya dhaataaramacintyaruupamaadityavarnam tamasah parastaat*. What is its meaning?
Baba: I don't know Sanskrit, first tell Me the Hindi meaning of Sanskrit, then I will tell its unlimited meaning. Tell Me. I have not studied Sanskrit. How many languages will I study? Baba says: you children should learn languages because you have to serve others. Study Sanskrit, English, Persian as well as Urdu, you have to serve the whole world, haven't you? So, learn all languages, so that you earn great fortune. You have to become world benefactor. I will not learn all languages. Yes, speak up.

(जिज्ञासु ने कुछ कहा।) क्या हुआ? (जिज्ञासु- अर्थ बताओ।) अर्थ... संस्कृत हम जानते ही नहीं न। बाबा तो बेहद का बाबा है, तो बेहद के अर्थ बतायेगा, या संस्कृत... बाबा तो संस्कृत क्या बोलते हैं? सुनन्ती, कथन्ती, भागन्ती। बाबा ये संस्कृत जानते हैं, बस। बाकी अगर थोड़ी बहुत संस्कृत जानते हैं तो प्रजापिता जानते हैं या ब्रह्मा जानते हैं। आपको जबाब किससे लेना है? (जिज्ञासु- शिवबाबा से।) हाँ फिर। शास्त्रों के एक-एक श्लोक ले करके बैठ जाओ सब लोग और पूछो, बाबा इसका अर्थ क्या है।

[2] Those whose beliefs and practices are opposite to that set by the Father

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: (Student said something.) What happened? (Student: Tell me the meaning.) The meaning… I do not know Sanskrit at all. Baba is the unlimited Baba, so will He tell [you] the unlimited meanings… what Sanskrit does Baba speak? *Sunanti, kathanti, bhaaganti*[3]. Baba knows just this Sanskrit. ☺ As for the rest, if there is someone who knows a little Sanskrit it is Prajapita or Brahma. From whom do you want to take your answer? (Student: From Shivbaba.) Yes, then? (Ironically:) Each of you, take out one shloka from the scriptures and ask: Baba, what does it mean? ☺

प्रश्न:- संगम का अन्त अर्थात कुछ समय पहले से ही प्रत्यक्षता जरुर होगी।

बाबा:- उसको संगम का अंत नही कहेंगे हमारे पुरुषार्थ का अन्त होगा। संगम का अन्त हो जायेगा तो कौन सा युग शुरु हो जायेगा? सतयुग शुरु हो जायेगा। फिर प्रत्यक्षता की बात नहीं रहेगी। तो प्रत्यक्षता का पार्ट बजाते हुये अपना वर्तमान आत्मा के, अपना वर्तमान माला के मणके का नम्बर और भविष्य राज्य का स्वरुप दोनों प्रत्यक्ष होंगे, वो कैसे होगा? जो बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चे होंगे, रुद्रमाला के मणके होंगे, बीज रुप स्टेज में, सूक्ष्मस्टेज में टिकने वाले होंगे वो अपने अनेक जन्मों को पहले प्रत्यक्ष करेंगे या बेसिक में चलने वाले पहले प्रत्यक्ष करेंगे? जो सूक्ष्मस्टेज में टिकना ही नहीं जानते, मनन, चिंतन, मंथन जिनका चलता ही नहीं और बाहर की दुनिया वाले, दूसरे धर्मों की तो बात ही दूसरी है, वो तो और ही पीछे के हो गये, तो सारा मदार प्रत्यक्षता का आता है आत्मा को सूक्ष्मस्टेज धारण कराने की बात पर। जितना स्मृति स्वरुप में हम अपनी आत्मा के स्वरुप को याद करेंगे कि मैं आत्मा अति सूक्ष्म ज्योति बिन्दु हूँ , उतनी हमारी मन, बुद्धि सूक्ष्म बनेगी और एक-एक बात की गहराई को पकड़ती जावेगी। अपने पार्ट के भी गहराई को पकड़ेगी और अपने जो नजदीक है जन्म - जन्मान्तर के उनके पार्ट के गहराई को भी पकड़ेगी।

Question: [The sign of] the end of the Confluence Age means, the revelation will definitely take place some time before [it ends].

Baba: It will not be called the end of the Confluence Age; it will be the end of making *purushaarth* [by us]. If the Confluence Age ends, which age will start? The Golden Age will start. Then there will not be the question of the revelation.

Question: So, while playing the role of revelation, our present rank as a bead of the rosary and the form of our kingdom in future, both will be revealed, how will that happen?

Baba: Those who are the intelligent children of the intelligent Father, the beads of the *Rudramaalaa* (rosary of *Rudra*), those who will be the ones who stabilize in the seed form *stage*, the subtle *stage*, will they reveal their many births first or will those who are in the *basic* [knowledge], the ones who do not know how to stabilize in the subtle *stage* at all, those who don't think and churn at all reveal [their many births] first? And as regards the people of the outside world, those belonging to other religions, it is a totally different question about them. They are the much latter ones [to be revealed] . So the revelation entirely depends on making the soul attain a subtle *stage*. The more we remember the form of our soul [thinking:] I, the soul am a very subtle point of light , the more our mind and intellect will become subtle

[3] Listening [to the knowledge] (*sunanati*), narrating it to others (*kathanti*) and running away [leaving the knowledge] (*bhaaganti*)

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

and it will grasp the depth of each and every topic. It will grasp the depth of its own *part* as well as the *part* of those who are close to it for many births.

सबसे जास्ती नजदीक होते हैं पति और पत्नि। तो जन्म - जन्मान्तर 21 जन्म का कोई हिसाब किताब भी होगा, उस हिसाब किताब के आधार पर सबके नम्बर डिक्लैर होते जावेंगे। स्वंय ही स्वयं को नम्बर डिक्लैर होगा। दूसरी आत्माओं को नम्बर डिक्लैर नहीं होगा। या तो उनसे कनेक्टेड जो भी उनको सिखाने वाले हैं गुरु, उनको पता चलेगा पहले। जैसे माला में 108 मणके हैं,9 ग्रुप है 12-12 के, तो 9 धर्म वाले जो मुखिया हैं अपने ग्रुप के 12 मणकों का पहले वो जानकारी करेंगे और उस मणके को भी जानकारी होगी जो उनसे कनेक्टेड है। अभी पहले नम्बर किसका लगेगा? सूर्यवंशियों का नम्बर लगेगा। सूर्य पहले प्रत्यक्ष होगा और सूर्य के साथ-2? (किसीने कहा - सूर्यवंशी।) हाँ, सूर्यवंशी बच्चे तो प्रत्यक्ष होंगे, लेकिन वो कितने होंगे? जो आठ है, अष्टदेव कहे जाते हैं... अष्टदेवों में भी नम्बरवार है, कोई चन्द्रवंश का मुखिया, कोई बौद्धि वंश का मुखिया, मुखिया न कहें पूर्वज कहें। अलग-2 धर्मों के अलग - 2 पूर्वज हैं, वो पूर्वज ज्यादा से ज्यादा सूक्ष्मस्टेज को प्राप्त करते हैं। फिर उनसे कनेक्टेड और जो आत्मायें हैं उनको अपना - 2 पता चलता है। अभी संग के रंग में आ रहे हैं या नहीं आ रहे हैं? तो उस संग के रंग के आधार पर उनका मनन, चिंतन, मंथन चलता रहेगा। और अपने - 2 पार्ट प्रत्यक्ष होते रहेंगे।

A husband and wife are the closest ones. So they will also have some karmic accounts for many births, for 21 births. Based on those karmic accounts the ranks of everyone will be declared. Someone's rank will be known to him alone, the other souls will not come to know his rank. Or else the gurus who are his teachers, who are *connected* to him, they will come to know of [his rank] first. For example, there are 108 beads in the rosary. There are nine groups of 12 [beads] each. So as regards the leaders of the nine religions, the 12 beads of his *group* will come to know [his rank] first and that bead (the leader) *connected* to them will also come to know [his rank]. Now, who will be the first [to know their ranks] ? The *Suryavanshis*[4]. The Sun will be revealed first and along with the Sun…? (Students: The *Suryavanshis*.) Yes, the *Suryavanshi* children will certainly be revealed, but how many will they be? The eight [souls], who are called *Ashta dev* (the eight deities) [will be revealed]. Even among the eight deities, they are number wise[5] . Someone is the leader of *Candravansh* (the Moon dynasty), someone is the leader of Bauddhivansh (the Buddhist dynasty); not leaders [but] they can be called ancestors (*puurvaj*). Different religions have different ancestors; those ancestors attain the most subtle *stage*. Then the other souls *connected* to them come to know about their [individual ranks]. Now, are they coming in the colour of their company or not? (Someone said: They are.) So their thinking and churning will keep taking place based on that colour of the company and their parts will keep being revealed.

[4] Those belonging to the Sun dynasty
[5] At different levels according to their *purushaarth*

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु:- बाबा, आदि सो अंत कहते हैं। आदि में ओम् का उच्चारण हुआ था, ओम् ध्वनी का, तो अन्त में भी होगा क्या?

बाबा:- उच्चारण होना भक्तिमार्ग की बात है या ज्ञानमार्ग की बात है? (सभी ने कहा- भक्तिमार्ग।) तो आदि में था भक्तिमार्ग का फाउन्डेशन, अन्त में भी ओम् तो होगा लेकिन उच्चारण के रुप में होगा या मानसिक स्टेज के रुप में होगा? मानसिक स्टेज के रुप में होगा। अन्दर ही अन्दर अनुभव करेंगे, क्या अनुभव करेंगे? कि मैं आत्मा कैसे - 2 स्थापना करने वाली हूँ अपनी दुनिया की। कौन सी दुनिया की मैनें स्थापना की है। और स्थापना की हुई दुनिया में कौन-2 मणकों की मुझे पालना करनी है नम्बरवार। फिर विनाश भी करना है। हर एक की अपनी - 2 दुनिया है उसमें अच्छे से अच्छे भी है और बुरे से बुरे भी है। जो बुरे से बुरे गुण हैं, बुरे से बुरे संस्कार हैं, बुरे से बुरे पार्टधारी हैं, उनको पहले ठिकाने लगाना पड़ेगा। तो बेहद में टिकने की जो बात है वो ही उन स्वरुप में टिकने की बात है। बाकी उच्चारण की बात नहीं है ।

Student: Baba, it is said that whatever happens in the beginning happens in the end as well. The word **'**Om' was chanted in the beginning, will it be chanted in the end as well?
Baba: Does chanting take place in the path of *bhakti* or in the path of knowledge? (Everyone said: The path of *bhakti*.) So in the beginning there was the *foundation* of the path of *bhakti*. In the end also there will be [the word] 'Om' but will it be chanted [orally] or mentally? It will be [chanted] mentally. They will experience within; what will they experience? 'How I, the soul establish my world, which world I have established and in that established world which are the beads (souls) whom I have to sustain before or later. Then I have to do the destruction as well. Everyone has his own world, in which there are the best ones as well as the worst ones. First the worst qualities, the worst *sanskaars*, the worst actors will have to be destroyed. So being stable in the unlimited means being stable in the form of 'Om'. As for the rest, it is not about chanting.

जिज्ञासु:- बाबा, फर्रुखाबाद में जो बेसिक वालो ने हंगामा किया था...

बाबा:- बेसिक वालों ने हंगामा किया, वो तो ऐसा कुछ तो नहीं खास देखने में आया। पब्लिक हंगामा कर रही थी। जो समाज की अलग - 2 सभा सोसाईटीया हैं, वो मीडीया को पढ़ करके, अखबारों को पढ़ करके और चैनल्स को देख करके, टी.वी. में जो देखते थे उस देख और सुनकरके और पढ़करके जो ग्लानी बुद्धि में बैठ गई, उसके आधार पर हड़कम्प मचाय रहे थे। अभी भी मचाय रहे हैं थोड़ा बहुत। विनाश ज्वाला कहाँ से निकली? रुद्र ज्ञान यज्ञ कुण्ड से विनाश ज्वाला निकली। तो यज्ञ कुण्ड माऊन्ट आबू में है क्या? कहाँ है? अरे कौन सी जगह का कुण्ड बहुत प्रसिद्ध है? द्रौपदी कुण्ड शास्त्रों में भी बहुत प्रसिद्ध है। तो 98 में वहाँ से विनाश ज्वाला निकली। चिनगारी फूटती है तो धीरे - धीरे आग लगती है कि एकदम भड़क जाती है? (सभी ने कहा- धीरे-2) तो दस साल अभी चिनगारी को सुलगने में लग गए। अब धीरे-2 फटना शुरु होना चाहिए कि नही? अव्यक्त बापदादा ने तो बोल दिया यु. पी. को धर्म युद्ध का खेल

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

दिखाना है। देखना है कि धर्मी, धर्म स्थिर रहता है या अधर्मी स्थिर रहते हैं, कौन टिका रहता है और कौन डिग जाते हैं। तो विनाश ज्वाला प्रज्वलित होगी तो क्या समझते हैं शांत हो जावेगी? 98 में जब बवन्डर शुरु हुआ था, तो यु.पी. के जनता पार्टी के जो लखनऊ के सहध्यक्ष थे राम प्रकाश त्रिपाठी उन्होंने आश्रम की तरफ से भाषण दे करके बोला था कि ये आश्रम सच्चाई से काम कर रहा है इनको अगर इसी तरह ज्यादा छेड़-छाड़ की गई तो सारा यु.पी. जलने लग पड़ेगा। अब वो छेड़-छाड़ तो लगातार जारी रही, इन 11-12-13 वर्षों में।

Student: Baba, the upheaval that the people from the basic knowledge created in Farrukhabad…
Baba: The people from the basic knowledge created an upheaval, nothing particular like this was seen. The *public* was creating disturbance. The different communities and societies were creating disturbances because of the defamation that sat in their intellect after listening to the media, reading newspapers, watching and listening to the [news] channels on T.V. Where did the flame of destruction emerge from? The flame of destruction emerged from the sacrificial fire (*yagya kund*) of the knowledge of Rudra. So is the *yagya kund* in Mount Abu? Where is it? *Arey*! The *kund* of which place is very famous? The *Draupadi kund*[6] is very famous in the scriptures as well. So the flame of destruction emerged from there in 98. When a spark kindles, then does it catch fire slowly or does it catch fire instantly? So it took 10 years for the spark to kindle. Now should the explosion start gradually or not? Avyakt Bapdada has said that U.P. has to show the play of religious war (*dharm yuddh kaa khel*). We have to see whether the righteous ones, the religion remains stable or the unrighteous ones remain stable.[We have to see] who stands firm and who shakes. So, when the flame of destruction emerges, what do you think? Will it calm down? When there was a commotion in 98, Ram Prakash Tripathi from Lucknow who was the Co-President of the Janta Party of U.P. spoke while delivering a lecture from Ashram's side: 'This Ashram is working honestly, if they are provoked more like this, then the whole of U.P. will burst into flames . Well, that provoking did continue for these 11, 12, 13 years.

अब ये पाण्डवों के 12-13 वर्ष और रामायण के 14 वर्ष पूरे हुये कि नहीं हुये? तो लड़ाई होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए? और पाण्डव तो लड़ाई लड़ते ही नहीं है। मुरली में भी बाबा ने बोला है, ये अखबार वाले आग लगायेंगे, ग्लानी करेंगे, भौंकते हैं उन्हें भौंकने दो। तुम कुछ भी न करो। क्या? कुछ भी न करो का मतलब क्या हुआ? सच्चाई को सिद्ध करने की जरुरत होती है क्या? इसलिये बोला तुम कुछ भी न करो। जो सच्चाई है वो स्वयं सिद्ध हो जाती है। एक कहावत है सच्चाई सिर पर चढ़ करके बोलेगी। इसलिये तुम कुछ भी न करो। भौंकते हैं उन्हे भौंकने दो। पुतले जलाते हैं तिराहों पर, चौराहों पर, जलाने दो। रावण की सभा में अंगद ने क्या किया? पाँव जमा दिया, चैलेन्ज दिया जिसमें ताकत हो वो हिला के दिखायें। तो बड़े - 2 ताकत वाले आये हिलाने के लिये, हम आग लगा देंगे हम उड़ाय देंगे, आल इण्डिया से आश्रमों को उखाड़ देंगे। फिर क्या पाँव हिल गया? ये तो सब चलता ही रहेगा। डर लग रहा है क्या? गीता पाठषाला चला रहे हो कि बन्द कर दी?

[6] A sacrificial pit from which Draupadi is believed to have emerged

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Now, have the 12, 13 years of the Pandavas and 14 years of the Ramayana completed or not? So, should the war take place or not and the Pandavas do not fight a war at all. Baba has said in the murli as well: 'These people from the press will cause trouble, they will defame. If they bark [at you], let them bark. Do not do anything. What? What does "Do not do anything" mean? Does truth need to be proved? This is why it was said, 'do not do anything'. Truth is proved automatically. Then there is a saying: Truth will stand high. This is why do not do anything. Those who bark [at you], let them bark. If they burn effigies on the junction of three roads or crossroads, let them burn that. What did Angad[7] do in the court of Ravan[8]? He planted his leg [and] gave a *challenge*: If anyone has strength, he may prove himself by budging my leg. So, many powerful people came to budge [his leg], [they said:] 'We will burn down, blow away and uproot the Ashrams from *all India*'. Then, did his leg move? All this will keep happening. Are you feeling afraid? Are you running the Gita pathshala or have you stopped [running it]? ☺

जिज्ञासु:- फर्रुखाबाद का जो एस.पी है न बाबा, उसने तो बताया - आश्रम पर हम केस नहीं करेंगे।

बाबा:- लेकिन उनके ऊपर दबाव तो डाला जा रहा है ऊपर से।

जिज्ञासु:- बी.के. वाले दबाव डाल रहे है न।

बाबा:- हाँ। वो तो ठीक है नोटों कि गड्डियाँ दबाव डाल रही है। तो जो दबाव पड़ रहा है उस दबाव से उऋण होने के लिये कुछ तो करना पड़गा। कुछ बनता बनानी पड़ेगी कि नहीं बनानी पड़ेगी? चलो, निगेटीव करने वाले को निगेटीव करने दो, हमारा काम क्या है? ग्लानी फैलाने में सहयोग देना या भगवान का गायन करने में सहयोग देना? (सभी ने कहा- भगवान का गायन करने में सहयोग देना।) बस हम अपना पोजीटीव काम करते रहें। फर्रुखाबाद में जैसे पार्टीयाँ पहले आती थी, आती रहेंगी और ज्यादा आयेंगी। कम्पिल में 98 का वाकया होने के बाद, हड़कम्प होने के बाद, पहले आल इण्डिया में तीन ही सेंटर थे एडवांस के। कलकत्ता, दिल्ली और कम्पिल। फिर क्या हुआ? अब तीन की जगह तीस हो गए। हो गए कि नहीं हो गए? अभी और ज्यादा बवंडर खड़ा होगा आगे तीन की जगह तीन सौ हो जायेंगे। ये लड़ाई है दीये और तूफान की। पब्लिक चिल्लाय रही है, पब्लिक से कनेक्टेड जो सभा सोसाईटीया है, बड़ी - 2 संस्थायें हैं सामाजिक, राजनैतिक वो चिल्लाय रही हैं, आश्रम के बारे में सच्चाई क्लियर होनी चाहिए, सी.बी.आइ. को सौपना चाहिए, उसको सौपना चाहिए; लेकिन गीत तो बने हुये हैं न - जादुगर, जादुगर आयेगा किसी को समझ नहीं आयेगा। खोद - खाद करते हैं मिलता उन्हें कुछ भी नहीं है। कम्पिल में एक कालेश्वर नाथ मंदिर है उसमें जो शिव लिंग रखा हुआ है गड्ढ़े में तो एक अंग्रेज अफसर ने उसकी खुदाई कराना शुरु कर दी, कितना गहरा है, खुदाई कराता चला गया और वो पत्थर और ही चौड़ा होता गया नीचे , आखरीन खुदाई करना बन्द कर दिया। अरे, जो प्रोसीजर है अगर समझना है तो सात दिन का कोर्स आकर के लो, तसल्ली से बैठ के किसी से सुनो, दो चार दिन कोर्स लेने के बाद भट्ठी करो, महीने दो चार महीने रेगूलर पढ़ाई पढ़ो,

[7] Name of the king of monkeys; son of Bali
[8] A villainous character in the epic Ramayana

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

इतनी ढ़ेर की ढ़ेर कन्याओं, माताओं, बुढ़ियों को समझ में आ सकता है, तो दुनियावी जो बड़े लोग हैं उनको समझ में नहीं आ सकता? लेकिन बाबा ने बोला हुआ है उसके लिये क्या करेंगे? बाबा ने तो एक मुरली में बोल दिया - जब बाप आते हैं तो दुनिया के बड़े-2 लोग मुर्ख बन जाते हैं, महामुर्ख। क्या बोला मुरली में? दुनिया के बड़े-बड़े लोग महामुर्ख बन जाते हैं। ऊँची-2 कुर्सियों पर बैठे हुये हैं, ऊँची - 2 महलमाडीयाँ - अटारियाँ बनाये बैठे हैं, बड़े - 2 कल कारखाने खोले बैठे हैं लेकिन बाप के बारे में उनकी अकल क्या कह रही है? मुर्ख बन रहे हैं कि महामुर्ख बन रहे हैं? महामुर्ख बन जाते हैं। सारे निर्णय उल्टे - 2 लेते हैं। समाज में ग्लानी फैलती है तो मारे मान मर्तबे के 'अरे, वहाँ हम कैसे जायेंगे? इतनी खराब जगह थू, हम नहीं जायेंगे कभी जिन्दगी में। तो बुद्धि में अंहकार चढ़ जाता है वहाँ जाके समझेगा कौन। समझने की तो बात ही दूर हो जाती है। वहाँ जाने आने वालों को भी हिराकत की नजर से देखते हैं 'हे! वैश्यालय में जा रहा है, हम तो बड़े आदमी है।

Student: Baba, the S.P. (Superintendent of Police) of Farrukhabad said: We will not file a case against the Ashram.
Baba: But they are being pressurized by the higher authorities.
Student: The BKs are pressurizing them, aren't they?
Baba: Yes. It is right that bundles of notes (money) are putting pressure [on them]. So to overcome the pressure which is being exerted [on them], they will have to do something. Will they have to make some plan or not? Alright, those who act negatively let them act negatively. What is our work? Is it helping [people] in spreading defamation or helping [people] in praising God? (Everyone said: Helping [people] in praising God.) We should keep doing our *positive* work. Just like parties came in Farrukhabad before, they will keep coming [in future], even more [parties] will come. After the incident, commotion that took place in Kampil[9] in 98… earlier there were only three centers of Advance Party in *all India*, [they were] in Kolkata, Delhi and Kampil. Then what happened? Instead of three, now there are thirty [centers]. Are there or are they not? Now, when a bigger commotion takes place, in place of thirty there will be three hundred [centers]. This is a fight between the lamp and the storm. The *public* is shouting, and the communities and societies connected to the public, the big social and governmental/political orgnisations are shouting: The truth of the Ashram should be revealed, it should be handed over to the CBI, to this one and that one, but songs have been made, aren't they? 'The magician will come, no one will be able to understand [anything]'. They carry out investigations but do not find anything. There is a Kaleshwarnath Temple in Kampil. There the *Shivling*[10] is placed in a pit. So [it is said about that] an English officer started digging [around] it, [to see] how deep it is. He kept digging and that stone (the *Shivling*) deepened more and more. At last he stopped digging. *Arey*, the procedure is [that] if someone wants to understand [the knowledge], then he should come and take the seven days *course*, he should calmly listen [to the knowledge] from someone for two-four days, undergo the *bhatti* after taking *course*, he should study regularly for two-four months. If so many virgins, mothers, old women can understand [the knowledge], then can't the wordly big people understand it? But Baba has said [in the murli], what can we do about that? Baba has said in a murli, when the Father comes, then the wealthy people of the world become fools, big fools. What has been said in the murli? The wealthy people of the world become big

[9] A village in Farrukhabad, Uttar Pradesh
[10] An oblong shaped stone worshipped all over India as the form of Shiva in the path of *bhakti*

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

fools. They are sitting on high positions, they have made tall palaces and multi storied buildings, they have opened big factories but what is their intellect saying about the Father? Are they becoming fools or big fools? They become big fools. They take all wrong decisions. When defamation spreads in the society, then because of honour and respect [they say:] *Arey*, how can we go there? It is such a dirty place, shame on it! We will never go there in our lifetime. The intellect becomes egoistic, then who will go there and understand? The question of understanding is completely left aside. They see even those who go there with contempt: 'Eh! He is going to the brothel. We are people of upper class!

जिज्ञासु:- अन्त में झुकेंगे न बाबा वो?

बाबा:- कौन?

जिज्ञासु:- जो बड़े - 2 हैं।

बाबा:- रावण झुकता है? कंस झुकता है? देवासुर संग्राम में जो भी असुरों की लड़ाइयाँ हुई हैं वो असुर झुके थे क्या? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ, बाकी सौ सुनने वालों में कोई एक निकलता है, वो हमारे कुल में आने वाला होगा तो आ जायेगा। अच्छा पुरुषार्थ करेगा, ऊँच पद पाय सकता है, नहीं तो कम से कम प्रजा पद तो मिलेगा ही। ओम् शांति।

Student: Baba, they will bow in the end, won't they?
Baba: Who?
Student: The influential people.
Baba: Does Ravan bow? Does Kans bow? In the wars that took place between the deities and the demons, did the demons bow? (Student said something.) Yes. Out of hundred listeners one [person] comes [in knowledge]. If he has to come to our family, he will come. If he makes good *purushaarth*, he can get a high position or he will at least get the position of a subject. Om Shanti.

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info